।। फळ फूल को अंग ।।
मारवाडी + हिन्दी
(१–१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ फळ फूल को अंग लिखंते ||

|| कवत ||

सक्त पंथ मे आय || भिन्न खोवे नर सारी ||
पूजे पांच पीर || अलख सिंवरे नर नारी ||
जां का अे फळ फूल || जनम अगले नर पावे ||
नर नरा मे बीर || नार जोगणी कुवावे ||
सुखराम ग्यान बैराग बिन || मोख न पावे कोय ||
तिब्र मद बेराग रे || हद बेहद का होय ||१||

कोई शक्ति पंथ मे(कुंडापंथ,बाम मार्ग,भैरवी चक्र)आकर किसी भी प्रकार का भिन्न भाव नही रखते मतलब उंच तथा निच जाती के नर-नारी इकठ्ठा होकर सभी खाने-पिने के सभी कर्म साथमे करते और पाबू,हरबू,जाडेचा जेहा,मांगलिया मेवा और रामदेव इन पाँचो पीरोकी पुजा करते और सभी नर-नारी अलख इस शब्दका स्मरण करते इसका उस मनुष्यके अगले जनममे जब मनुष्य जनम मिलता तब नर मनुष्योमे बीर बनता और नारी स्त्रियोमे जोगीनी बनती परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,इस शक्ति पंथके भक्तिसे किसी को भी मोक्ष नही मिलता । मोक्ष मिलाने के लिये ज्ञान वैराग्यही साधना पड्ता । ज्ञान वैराग्य छोड्के तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष नही मिलता ।।।१।।

सक्त पंथ मे आय || ग्यान ध्यान नही जाणे ||
संगे खेल नर नार || नित्त कर्मा दिस ताणे ||
जां का अे फळ फूल || जनम अगले नर पावे ||
नर होय साँसी साटीयाँ || नार बेस्या कुवावे ||
सुखराम ग्यान बेराग बिन || मोख न पूंते कोय ||
तिब्र मद बेराग रे || हद बेहद का होय ||२||

कोई इस शक्ति पंथमे(कुंडापंथ मे)आकर ब्रम्हा,विष्णू,महादेव ने बनाये हुये ज्ञान,ध्यान के नियम याने शुभ कर्म की मर्यादा नही मानते और किसी की भी स्त्री किसी भी पराये पुरुष के साथ भोग करती तथा सभी नर-नारी नित्य कुकर्मो की ओर खिंचते इसका उस नर-नारी को जब अगला मनुष्य जनम मिलता तब नर-नारी मे से नर निचकर्म करनेवाले सॉसी और साटे जात के बनते और नारी अगले जनम मे वेश्या होती । यह फल उन्हे मिलता परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,इस शक्ति पंथ(कुंडा पंथ)के भक्ति से किसी को भी मोक्ष नही मिलता । मोक्ष मिलाने के लिये ज्ञान वैराग्य ही साधना पड्ता । ज्ञान वैराग्य छोड्के तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष नही मिलता ।।।२।।

सिव मार्ग मे आय || साच बिन पांव न मेले ||
पाँचू ईद्री जीत || ऊलट ब्रहमंड मे खेले ||

जाँ का अे फळ फुल || जन्म अगले नर पावे ||
सक्त लोक ही लोप || जोत मे जोत समावे ||
सुखराम ग्यान बेराग बिन || मोख न पूँते कोय ||
तिब्र मद बेराग रे || हद बेहद का होय ||३||

शिवमार्ग मे आकर विश्वास से शिवब्रम्ह की भक्ति करता और शिव मार्ग से बाहर पैर नही रखता और पाँचू इंद्रियो को जितता तथा उलटकर ब्रम्हंड मे जाकर खेलता । इस धर्म का फल उसका शरीर छुटने के बाद यह मिलता की वह शक्ति लोक के आगे ज्योती लोक मे जाकर ज्योती लोकमे के ज्योतमे ज्योत बनकर समा जाता । यह फल उन्हे मिलता परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,कि शिवब्रम्ह की भक्ति से किसी को भी मोक्ष नही मिलता । मोक्ष मिलाने के लिये ज्ञान वैराग्य ही साधना पड्ता । ज्ञान वैराग्य छोड्के तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष नही मिलता ।।।३।।

नित ऊठ करे स्नान || प्रत चूके नही कोई ||
अेसो प्रण वृत धार || नार नर झुले दोई ||
जाँ का अे फळ फूल || जनम अगले नर पावे ||
म्हा रूपवंत देहे || जूण भावे जिण जावे ||
सुखराम ग्यान बेराग बिन || मोख न पूंते कोय ||
तिब्र मद बेराग रे || हद बेहद का होय ||४||

जो स्त्री-पुरुष प्रणव्रत धार के याने दृढ निश्चय करके नित्य प्रती मतलब कभी न भूलते उठकर स्नान करते उसका उस स्त्री-पुरुषको यह फल होता की उन्हे मनुष्य देह पकड्कर ८४ लाखके सभी योनीयो मे रुपवान काया मिलती । यह फल उन्हे मिलता परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि ऐसा प्रणव्रत धारने से किसी को भी मोक्ष नही मिलता । मोक्ष मिलाने के लिये ज्ञान वैराग्य ही साधना पड्ता । ज्ञान वैराग्य छोड्के तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष नही मिलता ।।।४।।

सती पुर्ष जग माँय || नित ऊठ पुन्न बिचारे ||
नन्नो भणेस नाय || देहे लग देणो धारे ||
जाँ का अे फळ फूल || जनम अगले नर पावे ||
माया सुख विलास || जूण भावे जिण जावे ||
सुखराम ग्यान बेराग बिन || मोख न पांवे कोय ||
तिब्र मद बेराग रे || हद बेहद का होय ||५||

और जो कोई इस जगत मे सती पुरुष है(सती पुरुष याने मुर्दे के साथ जलनेवाली स्त्री नही । सती पुरुष याने जिस पुरुष से को भी मनुष्य कोई भी वस्तु मॉगेगा वह वस्तु उसे दान करके दे देता)ऐसा सती पुरुष नित्य उठकर पुण्य करने का विचार करता और कोई

कुछ भी मॉगता है तो उसे नही नही कहता यहॉ तक की शरीर का कोई अंग भी काटके मॉगा तो नही नही कहता इसका उस सती पुरुष शरीर छोड्ने के बाद मनुष्य देह पकड्कर ८४ लाख योनी के हर योनी मे माया के सुख और विलास भोगने मिलते यह फल मिलता परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,ऐसा सती पुरुष बननेसे भी किसी को भी मोक्ष नही मिलता । मोक्ष मिलानेके लिये ज्ञान वैराग्य ही साधना पड्ता । ज्ञान वैराग्य छोड्के तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष नही मिलता ।।।५।।

तिब्र ओ बेराग ।। प्रेम साहेब सूं भारी ।।
सिंव्रण पुन्न बिचार ।। शुभ कर्मा सूं यारी ।।
जां का अे फळ फूल ।। जन्म अगले नर पावे ।।
सुजस बंधे संसार ।। सुरन को पुज कुवावे ।।
सुखराम ग्यान बेराग बिन ।। मोख न पोंचे कोय ।।
तिब्र मद बेराग रे ।। हद बेहद का होय ।।६।।

तिब्बर वैराग्य याने क्या?तीबर वैराग्य याने पारब्रम्ह होनकाल साहेबसे बहोत प्रेम करता,साहेब के नाम का जप करना तथा होनकाल पारब्रम्ह साहेब ने बनाये हुये पुन्य मतलब शुभ कर्म करता ऐसी भक्ति साधनेवाले को तिब्बर वैरागी कहते है । ऐसे तिब्बर वैरागी को इसका अगले जनम मे यह फल मिलता कि जब उसे अगला मनुष्य देह मिलता तब उसका इस मृत्युलोक मे बहोत सुयश बढता और वह देवता लोक मे सभी देवतावो का पुज्यनीय बनता यह सिधा साधा अर्थ बनता परंतु इसका यह भी अर्थ बनने की संभावना है कि वह अगले जनम मे या तो स्वर्ग मे जाता और वहाँ देवतावो का पुज्यनीय बनता या शुभ कर्म स्वर्ग मे पहुँचने के लिये कम पड्ने के कारण स्वर्ग मे नही जा पाता परंतु जब मनुष्य देह मे आता तब उसे संसार मे बहोत सुयश मिलता परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,तिब्बर वैराग्य साधने से भी किसी को भी मोक्ष नही मिलता । मोक्ष मिलाने के लिये ज्ञान वैराग्य ही साधना पड्ता । ज्ञान वैराग्य छोड्के तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष नही पहुॅचता ।।।६।।

मद सुण ओ बेराग ।। घेर पाँचू घर लावे ।।
अेक ब्रम्ह को ध्यान ।। ध्रम सब ही छिटकावे ।।
जाँ का अे फळ फूल ।। जन्म अगले नर पावे ।।
मिले ब्रम्ह मे जाय ।। ऊलट पाछो नर आवे ।।
सुखराम ग्यान बेराग बिन ।। मोख न पूँचे कोय ।।
तिब्र मद बेराग रे ।। हद बेहद का होय ।।७।।

मद वैराग्य याने क्या?मद वैरागी याने वह वैरागी जो पॉचो इंद्रियो को घेरकर पारब्रम्ह के ध्यान मे लगाता तथा माया के याने ब्रम्हा,विष्णू,महादेव ने बनाये हुये सभी धर्म त्यागता

|| राम नाम लो, भाग जगाओ ||

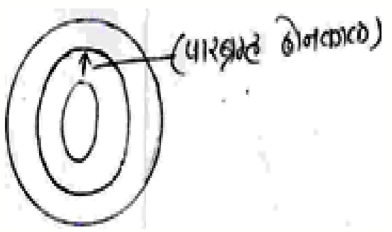

उसका मद वैरागी को शरीर छुटने पे यह फल मिलता की वह माया का तीन लोक त्यागकर पारब्रम्ह मे जाकर मिलता परंतु इस भक्ति मे यह कसर है कि कुछ समय के बाद फिर से गर्भ मे आकर माया मे पड़ता । सदा के लिये गर्भ से मुक्त नही होता । परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,मद वैराग्य साधने से भी किसी को भी मोक्ष नही मिलता । मोक्ष मिलाने के लिये ज्ञान वैराग्य ही साधना पड़ता । ज्ञान वैराग्य छोड़के तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष नही पहुँचता ।।।७।।

बेराग ग्याण यूं जाण ।। पिंड ब्रेहेमंड सुई न्यारा ।।
सासा का नही काम ।। जीभ का कहाँ बिचारा ।।
सुणत मस्त होय जाय ।। ब्रम्ह आपो छिटकावे ।।
शुभ असुभ दोय बास ।। निकट ने डी नही लावे ।।
सुखराम ग्यान बेराग का ।। अे लछन कहूं तोय ।।
हद बेहद कूं जीत कर ।। लियो प्रमपद जोय ।।८।।

ज्ञान वैराग्य याने हंस मे सतस्वरुप यानेही आनंदपद याने ने:अंछर यानेही निजनाम याने सतशब्द याने परमपद प्रगट होना यह है । सतशब्द याने परमपद यह पिंड ब्रम्हंड इस माया से निराला है । त्रिगुणी माया के करणीयो को जीभ का स्मरण लगता तो पारब्रम्ह के पद को सोहम अजपा साँस का आधार लगता । यह सतशब्द याने परमपद यह निराधार रहता । इसे पारब्रम्ह के समान साँस का आधार नही लगता तथा माया के विधी समान जीभ का आधार नही लगता । यह साँस और जीभ के आधार बिना चोबीसो घंटा अखंड्ति पिंड और ब्रम्हंड के बाहर सुनाई देता ।

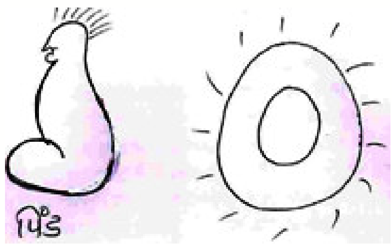

यह सतशब्द सुनते सुनते हंस अलमस्त हो जाता । यह सतशब्द याने परमपद प्रगट होने के बाद हंसका मे जीवब्रम्ह हुँ यह आपा याने अस्तीत्व खतम् हो जाता । परमपद प्राप्त होने के बाद हंस को शुभ याने शुभ करणीयाँ करनेसे तीन लोक मे त्रिगुणी माया के सुख के फल लगेगे तथा अशुभ याने निच कर्म करनेसे तीन लोकमे कालके दु:ख पड़ेंगे यह वासना उसके निकट भी नही आती । इस प्रकार के माया और पारब्रम्ह (होनकाल)के परे के सभी लक्षण ज्ञान वैराग्य प्रगट होने के बाद प्रगट होते । ऐसा ज्ञान वैराग्य प्राप्त हुवावा हंस हद याने ३लोक १४भवन और बेहद याने ३ब्रम्ह१३लोक जित कर यानेही त्रिगुटी व त्रिगुटीके परे पारब्रम्ह(होनकाल)को जित कर पारब्रम्ह के परे को परमपद प्राप्त कर लेता ।।।८।।

दयावंत सोई जाण ।। दर्द राखे नही कोई ।।

की डी कुंजर आद || सकळ पर क्रणा होई ||
जां का अे फळ फूल || जन्म अगले नर पावे ||
सुखी हुये जग माय || देव सब माँड सरावे ||
सुखराम ग्यान बेराग बिन || मोख न पूँचे कोय ||
तिब्र मद बेराग रे || हद बेहद कां होय ||९||

जिसे चिंटी से लेकर हाथी तक छोटे बडे सभी जीवोपर करुणा आती तथा चिंटी से हाथी तक किसी को भी किसी भी प्रकार का कोई भी दु:ख हो तो अपने से हो सके वहाँतक उसका दु:ख मिटा देता ऐसे पुरुष को दयावंत कहते है और उस दयावंत पुरुष को शरीर छुटते पे यह फल लगता की वह हंस अगले जनम मे जगत मे माया से सुखी बनकर आता व उसकी सारा जगत व देव शोभा करते परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,ऐसा दयावंत होने से भी किसी को भी मोक्ष नही मिलता । मोक्ष मिलाने के लिये ज्ञान वैराग्य ही साधना पडता । ज्ञान वैराग्य छोडके तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष नही पहुॅचता ।।।९।।

सकळ देव सूं भाव || चाय भारी ऊर माँही ||
ब्रम्हा बिष्ण महेष || राम हिर्दा ऊर जाँही ||
जाँ का अे फळ फूल || जनम अगले नर पावे ||
देहे धरे जग माँय || हार कबहूँ नही आवे ||
सुखराम ग्यान बेराग बिन || मोख न पूँचे कोय ||
तिब्र मद बेराग रे || हद बेहद का होय ||१०||

कोई मनुष्य ब्रम्हा,विष्णू,महादेव तथा ब्रम्हा,विष्णू,महादेव समान सभी देवता और कर्तार राम (होनकाळ पारब्रम्ह)से हृदयमे भाव और बडी चाहत रखता उसका उसे अगले जनममे यह फलफुल लगता है कि उसकी मायावी किसी भी काममे हार नही होती परंतु आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,ऐसे सभी देवोसे भाव रखने से और हृदयमे भारी चाहत रखनेसे किसी को भी मोक्ष नही मिलता । मोक्ष मिलानेके लिये ज्ञान वैराग्य ही साधना पडता । ज्ञान वैराग्य छोडके तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष में नही पहुँचता ।।।१०।।

व्रत वास ऊपवास || देहे कष्टे नर कोई ||
ईग्यारस चोविस || कर ऊजँव दे सोई ||
जां का अे फळ फूल || जन्म अगले नर पावे ||
मन बंछत फळ अेहे || देहे निरोगी कुवावे ||
सुखराम ग्यान बेराग बिन || मोख न पूँचे कोय ||
तिब्र मद बेराग रे || हद बेहद का होय ||११||

कोई मनुष्य देहको कष्ट देकर व्रत करता,उपवास करता,चौवीस एकादशी करता और उसका उद्यापन करता उस मनुष्यको अगले जनममे निरोगी शरीर यह मनोवांछित फल मिलता है । परंतु आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,इस व्रत,उपवास, एकादशी करनेसे किसी को भी मोक्ष नही मिलता । मोक्ष मिलानेके लिये ज्ञान वैराग्यही साधना पड्ता । ज्ञान वैराग्य छोड्के तिब्बर तथा मद वैराग्य साधनेसे भी मोक्ष में नही पहुँचता ।।।११।।

गायत्री चोबीस ।। सुध्द्य साझे नर कोई ।।
तीन बक्त त्रकाळ ।। नेम धर सेंठो होई ।।
जां का अे फळ फूल ।। जन्म अगले नर पावे ।।
मुख सूं कहे सोई होय ।। बेण खाली नही जावे ।।
सुखराम ग्यान बेराग बिन ।। मोख न पूँचे कोय ।।
तिब्र मद बेराग रे ।। हद बेहद का होय ।।१२।।

कोई मनुष्य चौबीस गायत्री कि शुध्द साधना करता है और दृढ पूर्वक नियम रखकर २४घंटे मे तीन बार त्रिकाळ संध्या करता है । इन बातोसे उसे अगले जनममे यह सिध्दाई प्राप्त होती है कि वह मुखसे जो वचन बोलता वे सभी वचन फलते उसमे से एक भी वचन निर्फल याने खाली नही जाता । परंतु आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,गायत्री की साधना करनेसे किसीको भी मोक्ष नही मिलता । मोक्ष मिलानेके लिये ज्ञान वैराग्यही साधना पड्ता । ज्ञान वैराग्य छोड्के तिब्बर तथा मद वैराग्य साधनेसे भी मोक्षमें नही पहुँचता ।।।१२।।

राम नाम ओ सब्द ।। जोर आराधे कोई ।।
सकळ ध्रम कूं छोड ।। अेक पर नेछो होई ।।
जाँका अे फळ फूल ।। जन्म अगले नर पावे ।।
रूम रूम रंरंकार ।। ऊलट ब्रेहेमंड मे जावे ।।
सुखराम ग्यान बेराग बिन ।। मोख न पूँछे कोय ।।
तिब्र मंद बेराग रे ।। हद बेहद का होय ।।१३।।

कोई मनुष्य रामनाम इस शब्दकी जोरसे आराधना करता और ब्रम्हा,विष्णू,महादेव तथा शक्ति ने बनाये हुये मायाके धर्म त्याग देता इसका उसे अगले जनममे यह फल लगता कि उसके देह मे रोम-रोममे ररंकारकी ध्वनी लगती और वह ध्वनी याने आवाज उलटकर ब्रम्हंड तक पहुँचती । परंतु आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते कि,इस रामनाम शब्दकी जोरसे आराधना करनेसे भी किसीको भी मोक्ष नही मिलता । मोक्ष मिलानेके लिये ज्ञान वैराग्य ही साधना पड्ता । ज्ञान वैराग्य छोड्के तिब्बर तथा मद वैराग्य साधनेसे भी मोक्ष में नही पहुँचता । ।।१३।।

जत्त सत तप तीन || असल धारे नर कोई ||
तन मन धन सब अरप || देहे पर रूचे सोई ||
जाँका अे फळ फूल || जनम अगले नर पावे ||
स्वर्ग लोक मे जाय || काँय नर भूप कवावे ||
सुखराम ग्यान बेराग बिन || मोख न पूंछे कोय ||
तीबर मद बेराग रे || हद बेहद का होय ||१४||

जत,सत,तप ये तीनो अच्छी तरहसे विधीयुक्त कोई धारन करता और तन,मन,धन अर्पण करके जत,सत,तपके लिये शरीरपर उदार रहता याने शरीरपर पड्नेवाले कष्टोपे दु:ख नही समजता उसे अगले जनममे ये फल मिलता कि वह या तो स्वर्गलोकमे जाता या यहाँ मृत्युलोक मे राजा बनता । परंतु आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि जत,सत, तप साधनेसे भी किसीको भी मोक्ष नही मिलता । मोक्ष मिलाने के लिये ज्ञान वैराग्य ही साधना पड्ता । ज्ञान वैराग्य छोड्के तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष में नही पहुँचता ||१४||

च्यार पुळाँ के माँय || पुन्न करणी जो पावे ||
सो नर व्हे भेभित || देव सब माँड सरावे ||
जॉका अे फळ फूल || जन्म अगले नर पावे ||
चक्रवंत नर होय || काँय बेराग संभावे ||
सुखराम ग्यान बेराग बिन || मोख न पूँचे कोय ||
तिब्र मद बेराग रे || हद बेहद का होय ||१५||

होनकाळ के समय चक्र मे किसी समय चार पल आते है वे पल कभी आते ये होनकाल मे ज्ञानी,ध्यानी को किसी को मालुम नही रहते ऐसे चार पलो मे कोई पुण्य हो जानेपर वह मनुष्य अपने मनुष्य उम्र मे बडा वैभवशाली होता ऐसे मनुष्य की स्वर्गादिक मे देवता तथा मृत्युलोक के नर–नारी शोभा करते । उसे इस फलके साथ अगले जनम मे यह फल मिलता कि एक तो वह अगले जनम मे चक्रवर्ती राजा होता या वैराग्य धारन करके वैरागी बनता परंतु आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि ऐसे चार पलो मे पुण्य हो जाने से भी किसी को भी मोक्ष नही मिलता । मोक्ष मिलाने के लिये ज्ञान वैराग्य ही साधना पड्ता । ज्ञान वैराग्य छोड्के तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष में नही पहुँचता |||१५||

ओऊँम सब्द कूं साझ || ऊलट ब्रेहेमंड मे जावे ||
लाख बरस लग सास || नाभ पाछो नही आवे ||
जांका अे फळ फूल || जनम अगले नर पावे ||
देहे धरे क्रतार || राम सो द्रसण पावे ||

सुखराम ग्यान बेराग बिन ।। मोख न पोंचे कोय ।।
तिब्र मद बेराग रे ।। हद बेहद का होय ।।१६।।

कोई मनुष्य ओअम शब्द की साधना करके पूर्व के दिशा से उलटकर भृगुटी ब्रम्हंड मे चढता और भृगुटी मे लाख वर्षतक साँस रोककर रखता और साँस को नाभी मे निचे नही आने देता उस मनुष्यको अगले जनम मे यह फल मिलता कि उसे देह धारन करके(होनकाळ)कर्ता राम दर्शन देता,परंतु आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,इस ओअम शब्द कि साधना करनेसे भी किसीको भी मोक्ष नही मिलता । मोक्ष मिलानेके लिये ज्ञान वैराग्यही साधना पड्ता । ज्ञान वैराग्य छोड्के तिब्बर तथा मद वैराग्य साधनेसे भी मोक्षमें नही पहुँचता ।।।१६।।

अडसट तीरथ न्हाय ।। पिरथी प्रदिखणा देवे ।।
कर माळा मुख राम ।। नाँव अेसी बिध लेवे ।।
जांका अे फळ फूल ।। जनम अगले नर पावे ।।
भक्त स्हेत सोई राज ।। देहे तज सुरगाँ जावे ।।
सुखराम ग्यान बेराग बिन ।। मोख न पोंचे कोय ।।
तिब्र मद बेराग रे ।। हद बेहद का होय ।।१७।।

कोई मनुष्य अड्सठ तिर्थो मे स्नान करके पृथ्वी प्रदक्षिणा करेगा और सदा हाथो मे माला और मुख मे रामनाम का जप करेगा उसे अगले जनम मे यह फल मिलता कि उसे स्वर्ग मे पहुँचानेवाली माया का भक्तिसहीत राज्य मिलेगा और वह राजा देह छुटने पे स्वर्ग मे जायेगा परंतु आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,अड्सठ तिर्थो मे स्नान करने से भी किसी को भी मोक्ष नही मिलता । मोक्ष मिलानेके लिये ज्ञान वैराग्य ही साधना पड्ता । ज्ञान वैराग्य छोड्के तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष में नही पहुँचता ।।।१७।।

सदा ब्रत नित नेम ।। ध्रम कन्या प्रणावे ।।
अभेदान दे नार ।। मोल कर पूठी लेवे ।।
जांका अे फळ फूल ।। जन्म अगले नर पावे ।।
सुरग लोक नर जाय ।। काँय क्रो डी धज कुवावे ।।
सुखराम ग्यान बेराग बिन ।। मोख न पोंचे कोय ।।
तिब्र मद बेराग रे ।। हद बेहद का होय ।।१८।।

कोई नित्य नियम पूर्वक सदाव्रत चलाता है और अपनी कन्या का धर्म के नियमो के अनुसार विवाह करता है तथा अभयदान(अभयदान याने अपने स्त्री को गहने कपडे के साथ किसी को दान करना और दान पाये हुये मनुष्य से वह जो माँगेगा उस किंमत मे वापीस खरीदना यह है) देता है इसका उस मनुष्य को अगले जनम मे यह फल लगता

कि एक तो वह स्वर्गलोक मे जायेगा या यही क्रोडी ध्वज याने राजा के समान या राजा से भी अधिक धनवान बनकर स्वर्गादिक के समान सुख लेयेगा,परंतु आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,ऐसा सदा व्रत चलाने से और अभयदान करने से किसी को भी मोक्ष नही मिलता । मोक्ष मिलाने के लिये ज्ञान वैराग्य ही साधना पड्ता । ज्ञान वैराग्य छोड्के तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष में नही पहुँचता ।।।१८।।

भक्त नाँव सोई अंग ।। सुभ सारा जग माही ।।
प्रेम भाव प्रतित ।। बिरह ब्याकूलता कुवाही ।।
जांका अे फळ फूल ।। जनम अगले नर पावे ।।
काम पडयाँ क्रतार ।। काज वाँका कर जावे ।।
सुखराम ग्यान बेराग बिन ।। मोख न पोंछे कोय ।।
तिब्र मद बेराग रे ।। हद बेहद का होय ।।१९।।

माया मे उज्वल भक्त बनने के जो जो अच्छे अच्छे स्वभाव ब्रम्हा,विष्णू,महेश ने बताये है वे सभी अच्छे अच्छे स्वभाव धारन करता तथा सृष्टी कर्ता से प्रेभ,भाव रखता,सृष्टी कर्ता मे गाढा विश्वास रखता और उसे पाने के विरह मे व्याकुळ रहता इसका उसे अगले जनम मे यह फल लगता कि उसे संसार मे काम पड्ने पे सृष्टी कर्तार स्वयम् आकर उसका काम करके जाता परंतु आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,ऐसे माया मे उज्वल भक्त बनने से तथा सृष्टी कर्ता से प्रेमभाव रखने से किसी को भी मोक्ष नही मिलता । मोक्ष मिलाने के लिये ज्ञान वैराग्य ही साधना पड्ता । ज्ञान वैराग्य छोड्के तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष में नही पहुँचता ।।।१९।।

अनाज पुरूष कहूं त्याग ।। दूध पीवे नर पावे ।।
बन फळ फूल अहार ।। जडी बूँटी खिण खावे ।।
जांका अे फळ फूल ।। जनम अगले नर पावे ।।
झाडा झपटा रोग ।। आण नर बेद कुवावे ।।
सुखराम ग्यान बेराग बिन ।। मोख न पोंचे कोय ।।
तीबर मद बेराग रे ।। हद बेहद का होय ।।२०।।

कोई मनुष्य अन्नका त्याग करके दुध पी पिकर जीवन जिता और दुसरो को भी दुध पिलाता और जंगल के फल-फूल तथा जडी बुटी खोद-खोदकर खाता उसे अगले जनम मे यह फल लगता कि वह मनुष्य झाड फूँक तथा जडी-बुटीयो से रोग दुर करनेवाला वैद्य बनता है,परंतु आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,ऐसे किसी पुरुष ने अन्न का त्याग किया तो भी किसी को भी मोक्ष नही मिलता । मोक्ष मिलाने के लिये ज्ञान वैराग्य ही साधना पड्ता । ज्ञान वैराग्य छोड्के तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष में नही पहुँचता ।।।२०।।

कुण्डल्या ||

पिता सरूपी राम रे || माता सरूपी जाण ||
तीजो राम सरूप हे || घरणी धरे पिछाण ||
घरणी धरे पिछाण || चुत्र चोथो वो होई ||
सत्तगुर समरथ होय || ग्यान धन देवे सोई ||
सुखराम किसा सुण सरूप को || ध्यान धरो तुम जोय ||
ब्रम्ह सकळ मे एक रे || राम घटो घट होय ||२१||

एक राम पिताके जैसा है तो दुजा राम माताके समान है तो तिजा राम पत्नी समान है और चौथा राम सतगुरु समान है । सतगुरु रुपी राम कालसे मुक्त करा देनेवाला ज्ञान विज्ञानका चतुर और समर्थ राम है । वह सतगुरुरुपी राम शिष्यको ज्ञानरुपी धन देता है । इसतरह से पिता,माता,पत्नी और सतगुरु स्वरुपके चार राम है । आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नर–नारीयो को पुँछ्ते है कि,तुम किसका ध्यान करते हो?और जिसका ध्यान करते हो उससे आवागमन कटेगा क्या? इसका विचार करो और ज्ञान दृष्टीसे समजो की सतस्वरुप ब्रम्ह यह सर्वव्यापी है और अखंडीत है और राम याने हंस सभी घट घट मे अलग अलग है । ||२१||

रेत सरूपी राम रे || राज सरूपी जाण ||
तीजो राम सरूप हे || सो तो सेण बखाण ||
सो तो सेण बखाण || चुतर चोथो वो होई ||
सत्तगुरू सत्त स्वरूप || ताँ ही गत लखे न कोई ||
सुखराम किसा सुण सरूप को || ध्यान धरो तम जोय ||
ब्रम्ह सकळ मे एक रे || राम घटो घट होय ||२२||

एक राम प्रजास्वरुपी है तो दुसरा राम राजा स्वरुप है तथा तिसरा राम सज्जन याने समान है और चौथा राम सतगुरुरुपी है । सतगुरु राम यह चतुर विज्ञानी है,सत्तस्वरुपी है । उसकी गती किसीको भी भाँपते नही आती । आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नर–नारीयो को पुँछ्ते है कि,तुम किसका ध्यान करते हो?और जिसका ध्यान करते हो उससे तुम्हारा आवागमन कटेगा क्या? इसका बिचार करो और ज्ञानदृष्टीसे समजो की सतस्वरुप ब्रम्ह यह सर्वव्यापी है और एक अखंडीत है तथा राम याने हंस सभी घट घट में अलग–अलग है ||२२|

सोहँ पिता कूँ सिंवरताँ || जीव ब्रम्ह होय जाय ||
ओऊंकार मा सेविया || कळा प्रगटे आय ||
कळा प्रगटे आय || ररो सिंवर्‍याँ सुण भाया ||
रूम रूम रंरकार || जक्त मे प्रचा पाया ||

सुखराम सत्तगुरू सेवीया || प्रममोख मिल जाय ||
आवा गवण न ओतरे || सुख मे रहे समाय ||२३||

पिता के जैसे सोहम् राम का स्मरन करने से जीव पिता के समान पारब्रम्ह(होनकाल)बन जाता और माता के जैसे ओअम् राम की भक्ती करने से जीव मे ओअ्म से जन्मी हुई कला प्रगट होती और जीव जगत मे परचे चमत्कार करता तथा पत्नी समान राम नाम का स्मरन करने से घट मे ररंकार की धुन लगती और जगत मे माया के पर्चे प्राप्त होते और सतगुरु समान चौथे राम की याने सतगुरु की भक्ती करने से हंस परममोक्ष मे जा मिलता जिससे उसका आवागमन मिट जाता और वह सतस्वरुप के सुख मे समा जाता |||२३||

ब्रम्हा बिस्न महेस तो || रेत सरूपी जाण ||
घड भंजण क्रतार वे || राज सरूप बखाण ||
राज सरूप बखाण || ब्रम्ह सो तो सम होई ||
सत्त गुरू सत्त स्वरूप || निसंक निर्भे कहू तोई ||
सुखराम किसा सुण रूप को || ध्यान धरो तम जोय ||
ब्रम्ह सकळ मे अेक रे || राम घटो घट होय ||२४||

ब्रम्हा,विष्णू,महादेव ये प्रजास्वरुपी राम है । इनकी भक्ती करनेसे हंस वैकुंठादिक जाता । घडभंजन कर्तार ये राजा समान राम है । इसकी भक्ति करने से पारब्रम्ह(होनकाळ) स्वरुपी बनता और मै स्वयम् जीव यह ब्रम्ह हूॅ और जगत के सभी जीव ब्रम्ह है यह जानकर जीवब्रम्ह की जो भक्ति करता वह होनकाल पारब्रम्ह के जीवब्रम्हपद मे पहुँचता और सतगुरु जो सतस्वरुपी है उनकी भक्ति करता वह काल के परे के महासुख के मोक्षपद मे जाता और उसे गर्भ मे पडने की कोई शंका नही रहती तथा काल खायेगा इसका डर नही रहता इसप्रकार निसंक और निर्भय होकर सतस्वरुप मे महासुख भोगता । इसलिये आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि सतस्वरुप ब्रम्ह तो सभी मे है,सर्वव्यापी है और अखंडीत है तथा राम याने हंस सभी घट घट के हर हंस ने सतस्वरुप ब्रम्ह की भक्ति की तो सभी काल से मुक्त होकर सतस्वरुप के महासुख पद मे जायेगे |||२४||

|| इति फळ फूल को अंग संपूरण ||